भावाअशिप- उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर द्वारा इंदौर (मध्यप्रदेश) में सातवें वन विज्ञान केंद्र का शुभारंभ (दिनांक 30 दिसंबर 2025)

भा वा अ शि प उष्ण कटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान जबलपुर द्वारा सातवें वन विज्ञान केंद्र का शुभारंभ दिनांक 30 दिसंबर 2025 को इंदौर में श्री अशोक बर्नवाल, अवर मुख्य सचिव,वन, मध्यप्रदेश, श्री वी एन आंबाडे, वन बल प्रमुख एवं प्रधान मुख्य वन संरक्षक,भोपाल एवं श्रीमति कंचन देवी, भा वा से,महानिदेशक, भारतीय वानिकी अनुसंधान शिक्षा परिषद,देहरादून के कर कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ। इस वन विज्ञान केंद्र द्वारा मध्य भारत के मालवा अंचल के कृषक एवं इस वनों पर आधारित जन जातियों के लिए जलवायु अनुरूप वानिकी की उत्कृष्ट तकनीक को प्रचार प्रसार किया जाएगा। कार्यक्रम की शुरुआत डॉ (श्रीमती) नीलू सिंह, निदेशक (प्रभारी) ने स्वागत उद्बोधन के साथ संस्थान द्वारा विकसित वानिकी तकनीकों पर आधारित विस्तृत जानकारी प्रस्तुति के माध्यम से दी एवं वनों पर निर्भर आदिवासी समूह के लिए विभिन्न उत्पाद के बारे दर्शाया। कार्यक्रम में मंचासीन सभी विशिष्ट अतिथियों द्वारा वन विज्ञान केंद्र की उपलब्धियों एवं चिरौंजी आधारित पुस्तिका का विमोचन भी किया गया।

श्रीमति कंचन देवी, महानिदेशक, भा वा अ शि प, देहरादून ने संस्थान द्वारा मध्य भारत के मालवा अंचल में वन विज्ञान केंद्र की स्थापना की बधाई दी एवं यह भी आह्वान किया कि वैज्ञानिक - कृषक के साथ मिलकर इस अंचल के लिए प्रदर्शन प्रक्षेत्र स्थापित करे ताकि अन्य कृषक भी जागरूक हो सके। संस्थान द्वारा किए गए नवाचार को जन जन तक प्रसारित करे ताकि वह इन प्राकृतिक तरीकों को अपनाकर आजीविका सुरक्षा के साथ आय में बढ़ोतरी कर सके। इसके अतिरिक इन प्राकृतिक तरीके से पर्यावरण को स्वच्छ बनाने में भी जन मानस अपना सके तो अमूल्य योगदान दे सके।

विशिष्ट अतिथि श्री आंबाडे जी ने संस्थान द्वारा स्थापित इस वन विज्ञान केंद्र के सफल आयोजन के लिए बधाई दी, साथ ही ये भी आग्रह किया कि हर तकनीक के साथ कृषकों को बाजार से भी जोड़ा जाए ताकि हितग्राही सीधे लाभान्वित हुए। मुख्य अतिथि श्री अशोक बर्नवाल जी ने संस्थान द्वारा विकसित वानिकी तकनीकों को अपनाने पर विशेष जोर दिया और कृषक बंधु से यह आग्रह किया कि अपनी आवश्यकता अनुसार खेत में कम समय में अधिक मुनाफा देने वाली प्रजातियां जैसे बांस एवं मिलिया डूबिया आधारित कृषि वानिकी को अपनाए। इनके लिए यह केंद्र सर्वाधिक उपयोगी रहेगा क्योंकि इसके माध्यम से इन कृषकों को लाख एवं बांस से मूल्य वर्धित उत्पाद बनाने का प्रशिक्षण दिया जाएगा ताकि आय दुगुनी की जा सके। इस अंचल के वनों में पाए जाने वाले लघु वनोपज जैसे अर्जुन छाल, तेंदू, चार चिरौंजी, पलाश, सतावर,सफेद मूसली, कलिहारी औषधीय पौधे का सतत् विदोहन कर वन संवर्धित एवं संरक्षित करने में अहम भूमिका निभाएंगे।

इस अंचल के हमारे कृषक बंधु चंदन चिरौंजी पान खमेर, सागौन हल्दी आधारित कृषि वानिकी पद्धति द्वारा भूमि की उत्पादकता में वृद्धि कर प्रधानमंत्रीजी के आय दुगुनी के सपने को भी साकार किया जा सकेगा।

संस्थान द्वारा विकसित वन उत्पाद का एक गिफ्ट हैंपर भी प्रदान किया गया। कार्यक्रम के अंत में आभार प्रदर्शन डॉ नंदिता बेरी,नोडल अधिकारी द्वारा दिया गया।

इस अवसर पर संस्थान के वैज्ञानिक द्वारा वानिकी के मॉडल भी प्रदर्शित किए गए जिसे कृषकों ने बहुत सराहा। कार्यक्रम के अगले चरण में सभी अधिकारियों ने बड़गोंदा स्थित आदर्श रोपनी का अवलोकन महानिदेशक ने किया एवं इस संस्थान के प्रयास को सराहा भी।

इस कार्यक्रम के सफल आयोजन के लिए संस्थान के सभी प्रभागाध्यक्ष, वैज्ञानिक एवं विशेष कर वन विभाग के मुख्य वन संरक्षक,इंदौर श्री पी एन मिश्रा, वन मंडलाधिकारी, इंदौर, श्री प्रदीप मिश्रा, डॉ कौशल त्रिपाठी, प्रमोद राजपूत, मनोज जोशी एवं हर्षित का विशेष सहयोग रहा।

आदर्श रोपणी
वड़गोंदा रोपणी
सामाजिक वानिकी इंदौर (म.प्र.)

वन विज्ञान केन्द्र, इन्दौर (म0प्र0)

अनुसंधान एवं विस्तार वृत्त, इन्दौर
म.प्र.शासन

वन विज्ञान केंद्र
इन्दौर (म.प्र.)

भा.वा.अ.शि.प.

वन विज्ञान

भा.वा.अ.शि.प. - उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर (म.प्र.)

वन विज्ञान केन्द्र, इन्दौर (म0प्र0)
एवं
वन विभाग, इंदौर
के संयुक्त तत्वाधान में

वन विज्ञान केन्द्र,
वानिकी की उन्नत
सुस्वागत

वानिकी की उन्नत तकनीक